पाठ 4: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (उत्साह, अट नहीं रही है)

1. कवि परिचय (Author Introduction)

- **कवि का नाम:** सूर्यकांत त्रिपाठी **'निराला'** (छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक)।
- **प्रमुख रचनाएँ:** अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते।
- **विशेषता:** निराला विद्रोही और क्रांतिकारी स्वभाव के कवि थे। उन्होंने मुक्तक छंद (Free verse) का हिंदी में पहली बार प्रयोग किया।

2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

उत्साह: यह एक **आह्वान गीत** (पुकारने वाला गीत) है। इसमें कवि ने बादलों को संबोधित किया है। बादल निराला जी का प्रिय विषय है। यहाँ बादल क्रांति, नव-निर्माण और ऊर्जा का प्रतीक है।
अट नहीं रही है: इस कविता में **फागुन (वसंत)** महीने की मादक और असीम सुंदरता का वर्णन है, जो आँखों और मन में पूरी तरह समा नहीं पा रही है।

3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

उत्साह

कवि बादलों से रिमझिम बरसने के बजाय ज़ोर-ज़ोर से **'गरजने'** का आह्वान करता है। वह बादलों के गर्जन में क्रांति और नवजीवन का संदेश देखता है। कवि बादलों को 'काले घुंघराले बालों' वाले सुंदर बच्चों की कल्पना के समान बताता है। बादलों के हृदय में बिजली (विद्युत) की चमक है और उनके भीतर एक कठोर 'वज्र' छिपा है। वे नई कविता रचने वाले कवियों को नई प्रेरणा देते हैं। गर्मी से बेहाल और प्यासी धरती के लोगों को बादल शीतलता प्रदान करते हैं और समाज में एक नई चेतना (उत्साह) भरते हैं।

अट नहीं रही है

फागुन मास (फरवरी-मार्च) में वसंत ऋतु का आगमन होता है। प्रकृति अपनी पूरी सुंदरता पर होती है। पेड़ों पर नए हरे और लाल पत्ते आ गए हैं। चारों ओर खिले हुए फूलों की मंद-मंद सुगंध हवा में तैर रही है, जिससे हर घर महक रहा है। यह सुंदरता इतनी अधिक और व्यापक है कि कवि की आँखें चाहकर भी उससे हट नहीं पा रही हैं। प्रकृति की यह शोभा कहीं भी 'अट' (समा) नहीं पा रही है।

4. काव्यगत एवं साहित्यिक विशेषताएँ

- **भाषा:** संस्कृतनिष्ठ (तत्सम शब्दों से युक्त) **खड़ी बोली**।
- **विशेषता:** 'उत्साह' में **ओज गुण** (जोश) और 'अट नहीं रही है' में **माधुर्य गुण** (मिठास) है।
- **अलंकार:**
  - **नाद-सौंदर्य:** 'घेर घेर घोर गगन', 'गरजो' (शब्दों से ध्वनि का अहसास)।
  - **मानवीकरण:** बादलों का और फागुन मास का मानवीकरण किया गया है (फागुन साँस लेता है)।
  - **पुनरुक्ति प्रकाश:** 'घेर घेर', 'पर-पर', 'घर-घर'।

5. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

उत्साह: समाज में परिवर्तन लाने, शोषितों को न्याय दिलाने और नव-निर्माण करने के लिए केवल कोमलता से काम नहीं चलता; इसके लिए क्रांति, पौरुष और जोश (गरजना) की आवश्यकता होती है।
अट नहीं रही है: मनुष्य के आंतरिक उल्लास (खुशी) का बाहरी प्रकृति के साथ गहरा संबंध है। जब मन प्रसन्न होता है, तो प्रकृति और भी अधिक खिली और सुंदर दिखाई देती है।

6. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **गरजने का कारण:** कवि रिमझिम के बजाय गरजने के लिए कहता है क्योंकि गरजना क्रांति, चेतना और नवजीवन का प्रतीक है।
- **बादल के दो रूप:** (1) प्यासी धरती को जल देकर शीतलता प्रदान करना। (2) समाज में क्रांति और बदलाव लाना।
- **नवजीवन वाले:** बादलों और कवियों दोनों को कहा गया है (बादल नया जीवन देते हैं, कवि नई सोच देते हैं)।
- **फागुन की व्यापकता:** सुगंध का घर-घर में फैलना, रंग-बिरंगे पत्तों और फूलों की भरमार।

Scholarbit